भक्त हृदय के उदगार

अन्य कुछ भी न रहे, नमो ही बाक़ी रह जाये।
तन मिटे मेरा सब मिटे, मन नमो ही गाती रह जाये ।।

मैं नमो कहूँ तुम नमो सुनो, नमो नमो ही रह जाये।
जो जो भाव उठे मन में, बस नमो नमो ही कह पाये ।।

तुझको बुलाती रहती हूँ, हर पल बारम्बार।
तू भी तो श्याम इक बेरी, नमस्कार मेरा कर स्वीकार ।।

नमो स्वीकार जो हो जाये, चरणन् अधिकार भी हो जाये।
दर पे तेरे जब आये, दर्शन अधिकार भी हो जाये ।।

-परम पूज्य माँ

प्रार्थना शास्त्र 1/272 (8.1.1960)

अनुक्रमणिका

1. **भक्त हृदय के उद्गार..**
   अन्य कुछ भी न रहे, नमो ही बाक़ी रह जाये..

3. **उन्होंने अक्सर मुझे हनुमान जी की याद दिलाई..**
   श्रद्धांजलि - आभा भंडारी

6. **..पर बल नहीं मोपे आ सकूँ, तुझको आना ही होगा!**
   परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

13. **नव प्रेरणा का संचार**
    श्रीमती शान्ता देवी

15. **आप 'मैं' की पट्टी खोल कर, अहंकार को चोटी से उतार ही देते हैं..**
    श्रीमती पम्मी महता

18. **मन मेरे तू जान ले, ज्ञातव्य इक वह ही है..**
    मुण्डकोपनिषद्, द्वितीय मुण्डक 2/1

23. **बुद्धि पर आवरण कोई नहीं रहा, वह तो निरासक्त हो गया..**
    श्रीमद्भगवद्गीता- 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन', अध्याय - 2/63-66

31. **श्रद्धा सुमन**
    पूज्य छोटे माँ

33. **भले बुरे सो तेरे**
    डॉ. जे के महता

37. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*

सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा मार्च 2023 को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -86/1, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-1, नई दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित

उन्होंने अक्सर मुझे हनुमान जी की याद दिलाई..

श्रद्धांजलि - आभा भंडारी

06.08.1958 – 04.03.2023

अतीव प्रिय राज.. भगवान जी हमेशा आपके अंग-संग रहें!

"राज, कृपया जल्दी से ऊपर आओ!" माँ के कमरे से लाउडस्पीकर पर ये शब्द गूँजते सुन प्रिय राज का दिल खुशी से झूम उठता था.. वह जल्दी-जल्दी आता.. खुश हुआ करता था कि उसके गुरु, उसकी दिव्य माँ, परम पूज्य माँ ने उसे बुलाया था.. अक्सर वह माँ के कमरे में बिजली की मरम्मत का काम अधूरा ही छोड़ देता था.. केवल इन शब्दों को सुनने के लिए और माँ के पास फिर से बुलाए जाने के लिए! और वह बेझिझक इस बात को स्वीकार भी किया करता था.. ऐसा भाव था उनके हृदय में पूज्य माँ के लिए!

उन्होंने अक्सर मुझे हनुमान जी की याद दिलाई.. जब हनुमान जी से पूछा गया कि उन्हें सबसे अधिक प्रिय क्या है, उन्होंने अपना सीना चीर कर भगवान राम और सीता माँ की हृदय में वास करने वाली छवियों को दिखाया! निश्चित रूप से राज के साथ भी ऐसा ही था.. उनकी दिव्य माँ, परम पूज्य माँ, उनके हृदय में बसती थीं.. जब भी उन्हें अवसर मिलता, गर्व से सभी के सामने वह इस बात को बताया करते थे!

अपने जानने वाले तथा अर्पणा में आने वाले हर व्यक्ति का वह गर्मजोशी व मीठी मुस्कान के साथ स्वागत करते.. हर कोई उनकी दिव्य माँ का 'अतिथि' जो था! और इसलिए वह सभी आगन्तुकों का पूरी तरह से ख्याल भी रखते! अर्पणा के रखरखाव और निर्माण सम्बन्धित गतिविधियों के प्रबंधन के साथ साथ अपनी 'गुरु माँ' और उनके पूरे परिवार को जिस भी सेवा की आवश्यकता हुआ करती

थी, उसे पूरा करने के लिये वह भरसक प्रयत्न किया करते.. अपने माँ के घर, अर्पणा, के हित में जिस प्रकार की भी सुरक्षा की आवश्यकता होती वह अपनी पूरी क्षमताओं के साथ उसे निभाया करते!

वह अर्पणा परिवार के हर वृद्ध एवं शारीरिक रूप से असमर्थ सदस्यों के लिए सदैव उपलब्ध रहा करते थे.. उन्हें व्हील चेयर से अस्पताल ले जाना.. हर संभव सहायता करना.. भले ही केवल उनकी वहाँ खड़े रहने की आवश्यकता ही क्यों ना हो! क्योंकि, कहते हैं ना, "वे भी सच्ची सेवा करते हैं, जो खड़े रहकर प्रतीक्षा करते हैं!"

प्रिय राज बहुत कम उम्र में ही माँ के पास आ गये थे.. पूज्य माँ के लिए उनका प्यार इतना अधिक था कि उन्होंने अपना पूरा जीवन यहीं समर्पित करने का फैसला किया। ऐसा नहीं था कि उन्हें कोई भावनात्मक मसले नहीं थे!.. वे भी कभी-कभी हो जाया करते थे.. जैसा कि हम सबके साथ होता है। लेकिन पूज्य माँ में उनकी श्रद्धा इतनी गहरी थी कि चाहे देर से ही सही, हमेशा उन्हें माँ के चरणों में वापिस ले आती थी! हर समय माँ के करीब रहने की उनकी लालसा सभी को स्पष्ट थी.. जब वह डलहौजी जातीं, तो राज को वहाँ से फोन कॉल की प्रतीक्षा रहती कि डलहौज़ी में माँ के प्रवास के दौरान मरम्मत और रखरखाव के लिए उन्हें (राज को) एक बार वहाँ जाना होगा। वास्तव में एक पल की सूचना पर माँ के पास जाने के लिए वह अपना बैग हमेशा पैक करके रखते थे!

वह किसी भी रखरखाव के संचालन को ठीक करने के लिए सदैव उपलब्ध रहा करते थे, जो दिन में कई बार हुआ करते थे और वह अपनी पूरी कोशिश से सुनिश्चित किया करते थे कि दूसरों को कम से कम असुविधा हो.. यह सब, एक गंभीर न्यूरोलॉजिकल समस्या के बावजूद जो उन्हें 15 साल से अधिक समय से थी.. कुछ भी उन्हें सेवा के इरादे से नहीं रोक पाता था।

वह अर्पणा अस्पताल में आने वाले हर रोगी की देखभाल में संग्लन रहा करते थे.. यह सुनिश्चित किया करते थे कि प्रत्येक रोगी पर जल्द से जल्द ध्यान दिया जाए.. यहाँ तक कि कई बार वह अपनी पत्नी साधना को देर रात जगाकर अस्पताल में देर से लाए गए मरीज के परिजनों को रात का खाना खिलाया करते थे। कोविड के दिनों में वह हर उस व्यक्ति के लिए उपलब्ध रहा करते थे जो

मदद के लिए पुकारता या जिसे अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता हुआ करती थी.. यहाँ तक कि वह अपनी सुरक्षा की भी परवाह नहीं किया करते थे!

पूज्य माँ के बाद, जो उनके दिल को सबसे अधिक प्यारी थीं, वह गंगा माँ थीं। गंगा माँ के बहाव रूप आलिंगन में राज को सबसे प्रसन्नता हुआ करती थी। परम पूज्य माँ ने हम सभी, बच्चों, के लिए गंगा माँ के साथ एक सुंदर सा सम्पर्क बना दिया था.. और हम सभी गंगा माँ को नानी माँ के रूप में देखते हैं.. राज के सबसे महान और सबसे सुखद क्षण वे क्षण थे जो वह गंगा माँ के करीब बिताया करते थे। शायद ही अर्पणा परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य हो जिसका गंगा में अंतिम विसर्जन राज के प्रेमपूर्वक योगदान के द्वारा न किया गया हो.. और अब वही गंगा माँ उसका भी अंतिम 'निवास' बन गईं.. जैसे ही गंगा माँ ने उन्हें गले से लगाया, और उनके 'फूल' अपनी लहरों के शिखर पर ले गईं, हमने उन्हें अलविदा कहा!

हम सबके प्रिय राज.. हम जानते हैं कि आपकी आगे की यात्रा वास्तव में आनंदमय ही होगी.. क्योंकि आपने इतने लोगों को जो कुछ 'दिया' है वह वास्तव में आपके पास वापस आ जाएगा.. सृष्टि का यही नियम है!

..पर बल नहीं मोपे आ सकूँ,
तुझको आना ही होगा!

पिता जी के प्रश्नोत्तर, 'जीवन मुक्त' - ज्ञान विज्ञान विवेक

पिता जी - जीवन मुक्त किसे कहते हैं? उस स्थिति को कैसे प्राप्त हुआ जाता है?

सारांश - तन, मन, बुद्धि समूह रूपा जीवन से जब 'मैं' का कोई नाता नहीं रहता तो जीव जीवन मुक्त हो जाता है। सत सों अगाध लग्न तथा प्रतिपल निजी आधुनिक मन और बुद्धि के दर्शन मात्र से जीव तन, मन, बुद्धि से उठ सकता है और परिणाम में जीवन मुक्त हो सकता है।

प्रश्न अर्पण -

जीवन मुक्त की बात कहें, कहो वह किसको कहते हैं।
कैसे मुक्ति पा करके, वह तेरे चरण में रहते हैं ॥१॥

कैसी भावना उनकी है, कैसी साधना उनकी है।
मनोगति वा बुद्धिगति, कहो राम वह कैसी है ॥२॥

तत्व ज्ञान

जीवन मुक्त जीवन के, बंधन सों जब मुक्त हुआ।
जीवन मुक्त है पुनि कहें, जीते जी जो मुक्त हुआ ॥३॥

जीवन सों क्या मुक्त हुआ, बंधन कारक सों मुक्त हुआ।
जड़ चित्त ग्रंथी टूट गई, त्रिपुटी सों वह मुक्त हुआ ॥४॥

स्वतंत्र भया अपनी 'मैं' सों, चित्त में कुछ भी नहीं रहा।
तन मन बुद्धि सों उठा, तब ही जीवन मुक्त भया ॥५॥

संग जो बाँधे जीवन सों, मोह मम और मैं गये।
उदासीन हुआ अपने प्रति, जग कहे जीवन मुक्त भये ॥६॥

कर्तृत्व भाव भोक्तृत्व भाव, तनत्व भाव सों मुक्त हुआ।
अहंकार से मुक्त हुआ, तो ही तो जीवन मुक्त हुआ ॥७॥

ज्ञान-विज्ञान सहित

तनत्व भाव सों हो जो परे, त्यागी वह हो जाये है।
नितांत त्यागी जब होये, निज तन सों वह उठ जाये है ॥८॥

स्थूल त्याग तो त्याग नहीं, घर त्यागे हो त्याग नहीं।
वस्तु त्याग भी त्याग नहीं, जग त्यागे हो त्याग नहीं ॥९॥

निज तन ही त्यज दे जिस पल, अपना तन न याद रहे।
समझ ले साधक मन समझ, त्याग पूर्ण तब ही होये ॥१०॥

तन में रहकर भी ऐसे जन, तन सों परे ही रहते हैं।
तन देखी उन्हें जग वाले, तन वाले ही कहते हैं ॥११॥

अपना तन अब जिये जिये, न भी जिये तो न सही।
तन की बात उन श्रेष्ठ गण, को कभी कहाँ याद रही ॥१२॥

जब तन सों संग ही नहीं रहे, तन त्यजें तन भूलें वो।
स्थूल को जिस पल भूल गये, सूक्ष्म को तब छू लें वो ॥१३॥

सूक्ष्म में कहो मनोवृत्ति, चाह संग और लग्न बसे।
मान्यता हो वहाँ भाव भी हों, प्रयोजन निज बना रहे ॥१४॥

स्थूल त्यजी कर सूक्ष्म में, आकर आसन लगायें जब।
मनोमौन की ओर ही, साधक बढ़ते जायें तब ॥१५॥

मन में जा के मान सों, चाह सों संग वह छोड़ दें।
पुनि स्थूल की बात नहीं, निज मन सों संग वह छोड़ दें ॥१६॥

कोई सुख दे कोई दुःख दे, द्वौ शब्द नहीं आते हैं।
राग द्वेष के द्वन्द्वन् से, वह तब उठ ही जाते हैं ॥१७॥

अपना मन भी कोई है, यह वह भूल ही जाते हैं।
दूजे के मन को नहीं त्यजें, वहाँ तो स्वतः निभाते हैं ॥१८॥

जब इक भी चाहना नहीं रहे, जब कुछ भी पाना नहीं रहे।
तन सों थे वह उठ चुके, मनो प्रयोजन नहीं रहे ॥१९॥

वैरागी वे हो जाते हैं, मन सों जब वैराग्य हुआ।
पुनि समझ तू साधक तब, निज मन सों वैराग्य हुआ ॥२०॥

दूजे को कुछ नहीं कहें, वे अपने मन सों उठ गये।
क्योंकर उठे यह जान ले, विधि है क्या यह समझ ले ॥२१॥

स्थूल सों जिस पल वे उठे, मन में जाकर बैठ गये।
आन्तर आ मुख पाछे जो, वृत्ति लोक में बैठ गये ॥२२॥

अपना दोष देखा करें, अपना मन देखा करें।
निज चाह बीज वे देखा करें, मनोलोक देखा करें ॥२३॥

देख देख वे चित्त देखें, चित्त शुद्ध हो जाये है।
चाह अभाव जिस पल हो, वैराग्यपूर्ण हो जाये है ॥२४॥

पर याद रहे बुद्धि राही, ही वे स्थूल तन त्यजी आये।
और बुद्धि राही ही जानो, निज मन से वे उठ पाये ॥२५॥

पुनि बैठे मनोमन्दिर में, आसन चरण में जाये लगे।
स्वतः हृदय से वे साधक, राम नाम पुकार उठे ॥२६॥

राम कही के यही कहा, मोपे बुद्धि नहीं है राम।
जो पाया जो न पाया, वह सब था तेरा ही काम ॥२७॥

बुद्धि त्याग की राह पे, वो साधक तब बढ़ जाते हैं।
अपनी मान्यता बुद्धि राह, अर्पित वे कर आते हैं ॥२८॥

क्या भला और क्या बुरा, फिर कुछ भी नहीं याद रहे।
जो कहना था वे साधक, पूर्ण रूपेण कह चुके ॥२९॥

जिस पल बुद्धि से उठे, निज बुद्धि से हुए परे।
अग्न रंगी वा बुद्धि भये, ज्ञान अग्न से वे जले ॥३०॥

वह जलाव पुनि समझ, राम कथन से ही हुई।
बुद्धि भस्म सुन मना, श्याम वचन से ही हुई ॥३१॥

उपनिषदन् ने जो कहा, सच उसे ही मान लिया।
वाक् की वहाँ बात नहीं, वास्तविकता में मान लिया ॥३२॥

जिस विधि इस पल साधक, तू तन अपना ही माने है।
बिन कहे बिन याद किए, निज को तन ही जाने है ॥३३॥

पुनि समझ समझाऊँ तुझे, अजपाजाप है हो रहा।
मैं तन हूँ मैं मन हूँ, बिन वाक् वाद यह हो रहा ॥३४॥

इसी विधि जब बुद्धि गई, तन मन सों परे 'मैं' हो गया।
तन मन बुद्धि के संग से, साधक परे वह हो गया ॥३५॥

जीवन मुक्त उसे कहें, जीवन उसका नहीं रहा।
तन का जीवन या मन का, बुद्धि का भी नहीं रहा ॥३६॥

तन अपनाये तो ही कहो, यह जीवन उसका होये है।
मन अपनाये तब ही कहो, यह मन उसका होये है ॥३७॥

तन मन बुद्धि का जीवन, यह त्रैलोक ही होये है।
त्रैलोक परे जो हो चुका, त्रैलोक पति वह होये है ॥३८॥

ऐसी बात गर समझ ले, तब ही उस की समझेगा।
बिन पहुँचे शब्दन् में, गुणातीत की क्या समझेगा ॥३९॥

गुणातीत भी वह नहीं, गुणपति चाहे कह लो।
गुणपति भी वह नहीं, वह है ही नहीं चाहे कह लो ॥४०॥

वा तन उसका गर तुम कहो, तनधारी वा नाम धरो।
अवज्ञा उसकी करते हो, इसका राज़ भी जान लो ॥४१॥

वा का तन कोई नहीं रहा, 'तनधारी' तन वाला कहे।
मन वाला वा के मन को, सुन साधक मतवाला कहे ॥४२॥

बुद्धि वाला अनेक बार, उसे बुद्धू ही पुकारेगा।
तत्वदर्शी तत्व चाहुक, जब उसको निहारेगा ॥४३॥

वह जानेगा शास्त्र के, वाक् की प्रतिमा है वह।
वहाँ अपनापन है नहीं नहीं, भगवान की प्रतिमा है वह ॥४४॥

पर कैसे पहुँचें राम वहाँ, बार बार तुझे पूछे हूँ।
पथ कहो भगवान मेरे, पथ आज मैं पूछे हूँ ॥४५॥

प्रथम लग्न हो सत्य में, अगाध प्रीत जब हो जाये।
केवल सत्य ही सत्य मिले, मन केवल यह ही चाहे ॥४६॥

तन रहे या नहीं रहे, मान या अपमान मिले।
केवल राम ही सत्य है, मन चाहे बस राम मिले ॥४७॥

जब राम से प्रीत हो जायेगी, या सत्य से प्रीत हो जायेगी।
केवल सत्य ही सत्य मिले, जब हर वृत्ति यह चाहेगी ॥४८॥

तब जानो इक पल में ही, स्थूल से उठ जाओगे।
आपुनो लग्न हो सत्य में, तन को भूल ही जाओगे ॥४९॥

गर प्रीत नहीं है सत्य में, तो राम को सत्य न मानो।
तेरा मालिक बस स्थूल है, राम को मालिक न जानो ॥५०॥

जग में जाकर जब कहो, 'यह करूँ जग को भाऊँगा।
ऐसा वाक् गर मैं बोलूँ, तो जग प्रिय हो जाऊँगा' ॥५१॥

आपुनो स्थापति गर चाहो, तो सत्य से प्रीत न हो पाये।
गर प्रीत सत्य सों हो जाये, पल में जग सों उठ जाये ॥५२॥

जग क्या कहे किसे याद रहे, तन रहे रहे किसे याद रहे।
फिर क्या मिले क्या नहीं मिले, ऐसा कहाँ पे भाव रहे ॥५३॥

अब समझ जब प्रीत भई, तब राम चरण में बैठोगे।
क्यों दूरी है तुमसे राम, राम को आप ही कह दोगे ॥५४॥

गर चरण में बैठ के राम के, कहो राम क्यों दूर हुए।
क्यों नहीं आज तलक, राम मेरे ज़हूर हुए ॥५५॥

जब ऐसे पूछो राम से, तो प्रीत के कारण पूछोगे।
फिर अपने आंतर जा करके, अपने मन सों पूछोगे ॥५६॥

लग्न कहाँ पे तेरी है, जो मन में है सच सच कह दे।
भावना तेरी वास्तविक क्या, राम से सच सच तू कह दे ॥५७॥

मन से पूछे बुद्धि जब, आंतर आसन लग जायेगा।
स्थूल आसना छुट करके, मन में आसन लग जायेगा ॥५८॥

मन में ही निज दर्शन हों, साधु वृत्ति निज देखा करे।
साधु दृष्टि के सामने, मल तनिक न रह सके ॥५९॥

गर प्रीत तेरी बढ़ती गई, सत्य लग्न बढ़ जायेगी।
लग्न अग्न का रूप धरे, मन से मन उठ जायेगी ॥६०॥

गर लग्न हुई साचो मन में, चित्त पावन हो जायेगा।
सूक्ष्म लोक से मन उस पल, साधक तव उठ जायेगा ॥६१॥

स्वर्गलोक इसे कहते हैं, तन से उठे तो स्वर्ग मिले।
स्थूल लोक की बात फिर, उसे कभी न छू सके ॥६२॥

सूक्ष्म लोक में आ करके, दुःख सुख से उठ जाता है।
ऋद्धि सिद्धि आ जाये, जो चाहे वह पाता है ॥६३॥

गर चाहना हो सत्य की, जग की ओर वह न देखे।
प्रीत इतनी बढ़ जाये, सत्यनिष्ठ तब हो जाये ॥६४॥

लग्न जब बढ़ जायेगी, बुद्धि पे आ जाओगे।
बुद्धि से स्वतः जानो, फिर साधक उठ जाओगे ॥६५॥

जो प्रीत है तेरी सत्य में, वही तुझे उठा देगी।
तन मन सों तोरी बुद्धि सों, देख स्वतः उठा देगी ॥६६॥

साधक की ओर से प्रार्थना

राम सुनो यह ज्ञान की, बातें बहुत हैं हो चुकीं।
किसे कहें कैसे पहुँचें, यह बातें भी हो चुकीं ॥६७॥

पर बल नहीं मोपे आ सकूँ, तुझको आना ही होगा।
प्रीत लोक में भी सुनो, अब तुझे बिठाना ही होगा ॥६८॥

मैंने सुना है राम मेरे, तुम झुक के भक्त उठाते हो।
पर जाना है शास्त्रन् से, तुम भक्त भी आप बनाते हो ॥६९॥

मोपे प्रीत नहीं मैं जाने हूँ, पर प्रीत का अंकुर डाल दो।
यह कृपा भी आन करी, राम मेरे तुम आप करो ॥७०॥

तनोत्याग की बात कहो, यह तनोत्याग मुझसे न हो।
तोरे चरण में तन धर दूँ, इसको तुम स्वीकार करो ॥७१॥

मन की बातें भी सुनो, जन्म जन्म का साथ मेरा।
मुझसे सुन हे राम मेरे, मनो साथ नहीं छूटेगा ॥७२॥

गर तू प्रीत वहाँ भर दे, मैं मन से उठ जाऊँगा।
जानूँ राम मैं जानूँ फिर, तेरा ही हो जाऊँगा ॥७३॥

यह बुद्धि की बात कहूँ, मोरे बस की बात नहीं।
राम मेरे मेरी बात सुनो, कुछ भी मेरे हाथ नहीं ॥७४॥

एक शब्द बस राम ही है, मैं तो राम ही राम कहूँ।
भाव रहित है शब्द मेरा, मैं राम राम बस राम कहूँ ॥७५॥

चाह नहीं मोरी सत्त्व की, मुझे लग्न भी नहीं नहीं।
फिर सुनो हे राम मेरे, मैं तो नाम भी लूँ नहीं ॥७६॥

इस कारण मैं कहता हूँ, जानूँ सत इक तू ही है।
ज्ञातव्य और प्राप्तव्य, जाना राम इक तू ही है ॥७७॥

राम कृपा अब तुम ही करो, सीस झुका के कहता हूँ।
नमो नमो तो कहता हूँ, पर नमन कर नहीं पाता हूँ ॥७८॥

२१.१२.१९६५

नव प्रेरणा का संचार

श्रीमती शान्ता देवी
(पूर्व संकलन)

"अर्पणा" से सम्पर्क का सौभाग्य मुझे कई वर्षों से प्राप्त है। जैसे जैसे मन्दिर में मैं भगवान जी के दिव्य स्वरूप के दर्शन करती और साधकों के प्रश्नोंत्तर के रूप में पूज्य माँ के मुख से तत्व विवेचन भरे स्वतः निसृत अभंग प्रवाह को सुनती, श्रद्धेय छोटे माँ द्वारा गीता व उपनिषदों की व्याख्या का तत्व प्रमाण सहित श्रवण करती तो हृदय से बार-बार यही आवाज़ निकलती कि 'हे प्रभु! क्या अन्य साधकों की भाँति मुझे भी यहाँ स्थायी वास के लिये इस जन्म में कभी सुखद सुअवसर प्राप्त होगा?' यहाँ से जाने पर मेरा अन्तर्मन व्याकुल हो उठता और विशेषकर मन्दिर में स्थित भगवान जी की सजीव प्रतिमा से दूर जाते हुए मन छटपटा उठता..

कहते हैं, हृदय की पुकार भगवान उसी तीव्रता से सुनते हैं जिस तीव्रता से उन्हें पुकारा जाये। इस नव वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रभु कृपा से मुझे अर्पणा की पुण्य धरा पर वास करने का सौभाग्य मिला और इतने लघु काल में ही मैं भगवान की निकटता का अनुभव कर रही हूँ। वह एक भागवद् शक्ति के रूप में आज भी हमारे बीच में हैं। परम पूज्य माँ का संरक्षण पा कर मैं स्वयं में नव जीवन, नव उत्साह व विशेष स्फूर्ति का संचार देख रही हूँ। सत्संगों में प्रश्नोत्तर रूप में उनके मुखारविन्द से प्रवाहित हल सुनने का जितना-जितना अवसर मिला, मैंने यही महसूस किया कि वह पावनी गंगा सदृश शीतलता प्रदान करके, संतप्त व विक्षिप्त मनी जीव को उसके मानसिक भावोद्वेग-संवेग से ऊपर उठने की राह बताती हैं। उन के मुख से निकला हर "वाक्" केवल प्रेरणा मात्र ही न हो कर साधक के लिये पथ-प्रदर्शक बन, उस का सतत् मार्गदर्शन करके उसे श्रेय और सत्य की ओर अग्रसर करता है।

माँ न ही उपदेशक हैं और न ही प्रवचनकर्ता। परम मौन में स्थित वह शास्त्रों की एक सजीव प्रतिमा हैं। उनके पास आते ही उनके मोहक चक्षु मुखर संदेश देने लगते। उनकी दृष्टि आगन्तुक के मन में एक विचित्र सी प्रेरणा पैदा करती है , तथा शान्त, धीर, गम्भीर सागर में उत्पन्न तरंगों की भाँति उसके अन्तर्मन में उठी लहरें उनका चरण-स्पर्श पाने को अधीर हो जाती हैं। दैवी गुणों की साकार मूर्तिमन्त "माँ" के जीवन व दिनचर्या को देखें तो वह सतत् कर्त्तव्यशील रहती हैं। उनकी प्रेरणा पा कर अर्पणा की विभिन्न गतिविधियाँ व क्रिया-कलाप यहाँ के साधकों के जीवन का ज्वलन्त मुखारित रूप हैं। छोटे से छोटे काम से लेकर बड़े से बड़े कार्य में भी वही प्राण-स्पन्दन शक्ति प्रतीत होती है। वह स्फूर्ति, शक्ति, सजगता व चेतना की अक्षय निधि हैं। अहर्निश निरन्तर कर्मशील हो कर भी वह स्वयं निष्काम, निर्पेक्ष, निर्विकल्प, स्थित प्रज्ञ, त्रिगुणातीत, आत्मवान, अचिन्त्य ब्रह्मरूपा हैं। उनके हर पल हर श्वास से निष्काम कर्मों का प्रवाह बहते हुए भी उनका अखण्ड मौन उन राही प्रतिबिम्बित होता है। उनके जीवन को देख कर मुझे गीता का यह श्लोक कुछ-कुछ स्पष्ट होने लगा है :

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भू मा ते सङ्गाऽस्त्व कर्माणि।।" (2/47)

अर्थात् कर्म में ही तेरा अधिकार है, फल में अधिकार नहीं है तुम्हारा, कर्मफल हेतु कर्म न करो, अकर्म में भी तेरा संग नहीं होना चाहिये।

वह देह में रहते हुए भी देहात्म बुद्धि से परे हैं। वह साधक को उत्तरायण की ओर चलने की प्रेरणा देती हैं। हमें उनके प्रकाशित एवं सुबासित जीवन से दैवी गुणों की सम्पदा झोली भर प्राप्त होती है। उनका समस्त जीवन यज्ञमय और सर्वभूत हिते रतः है। वह परम समाधिस्थ परम शिव की तरह विपरीत परिस्थितियों में अपने प्रति निःसंग तथा दूसरों के लिए शुद्ध प्रेम, करुणा व सहानुभूति देने में नित्य अग्रसर हैं। निर्धन अमीर, अज्ञानी ज्ञानी, अशिक्षित शिक्षित, बच्चा व वृद्ध जिसको भी उनका दिव्य सम्पर्क प्राप्त हुआ, वह निहाल हो गया।

हर जीव उनके लिये राम रूप है। हर प्राणी को "सिया राममय सब जग जानी" मान कर वह उसकी तन-मन धन से सेवा करती हैं। अपने सत्संगों में वह प्रश्न कर्त्ता के तदरूप होकर उनके प्रश्नों का समाधान करते हुए, उसकी मनोग्रन्थियों को सुलझा कर उसको सत पथ पर ले जाती हैं। ऐसी अखण्ड स्वरूप दिव्य मूर्ति माँ के चरणों में आ कर, उनमें प्रेम, करुणा, वात्सल्यमय रूप का दर्शन करके, उनके श्री चरणों में अर्चना का एक पुष्प बन कर अर्पित होने को मेरा मन अधीर हो उठा है। ❖

आप 'मैं' की पट्टी खोल कर,
अहंकार को चोटी से उतार ही देते हैं..

श्रीमती पम्मी महता

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, आपसे आपका प्यार पाकर ही

हे माँ.. हम बावफा हो गए!

आभार मानती हूँ आपका, हे साईं रब, जो आप प्रभु के मुरीद हो गये!

आपकी बेपनाह मुहब्बत में गिरफ्त हो कर ही जाना..

क्योंकर आपकी इबादत में उठ जाते हैं हाथ..

जो आपके करम से सदा के लिये उठे ही रहते हैं !

हम जानते हैं हे माँ, हम अधूरे ही हैं.. आप सदगुरु की कृपा से ही हम पूर्ण होते हैं! आप परम वन्दनीय सदगुरु इसी लिए हैं कि आप अपने समेत, अपना सर्वस्व मुझे प्रदान कर देते हैं या कहूँ, जीव जगत को प्रदान कर देते हैं। ऐसी अनूठी मुहब्बत पे कुरबान जाती हूँ! ऐसी मुहब्बत का कोई सानी नहीं.. हो भी कैसे सकता है?

इतनी मुकम्मलता! मेरे हृदय की ऊसरता को मिटा कर कैसे हृदय को सरस कर दिया आपने! आप कमाल हैं.. और आपकी मुहब्बत भी! जिसपे आप प्रभु माँ की नज़रे इनायत हो जाती हैं उसके लिये आपका प्यार हर हद से गुज़र जाता है.. अनन्त का प्यार जो है! अपने लिये कुछ भी बचा कर नहीं रखते आप! आप तो पूर्ण की पूर्णता में ही व्याप्त हैं। आपकी महिमा गाते गाते, मेरा व्यक्त, अव्यक्त सभी उसी महिमा आपकी में सिमट आते हैं। आपका हृदय धड़कता है सभी के लिये.. एक समान!

ऐसे में, जब आपकी आग़ोश में सिमट कर आई तो आपके वात्सल्यपूर्ण हृदय ने इस हृदय को स्वयं ही धड़कना सिखा दिया। आपके प्रेम की नमी ने इसके आंतर की कठोरता को इस क़दर पिघला लिया कि आप ही की प्रीत से ओत-प्रोत रहता है यह हृदय.. और नम भी!

हे श्री हरि माँ, आप सच ही धन्य हैं। धन्य धन्य कही धन्यवाद करती हूँ आपका.. आपको कोटि कोटि व शतः शतः प्रणाम माँ प्रभु जी! सच ही कहा है संतन् ने जिसने एक बार आप माँ की प्रीत चख ली तो वह हृदय पीछे मुड़ कर नहीं देखता। इतनी प्रेरणा व जिज्ञासा जो भर जाती है.. आपको आगे से आगे देखने की.. आप विभूति पाद के पद पखारन की चाहत की.. जो पग मेरे लिये चलते ही चले आ रहे हैं युगों से.. युग-युगान्तर से.. अनथक मेरे लिये! मुझे सतपथ पर लाने के लिये.. आध्यात्मिक जीवन जीने के लिये कैसे कैसे रिझाते हुये, मनाते हुये.. कर पकड़ी लिये ही चलते चले जा रहे हैं।

एक नवीनता सी आपका हर कर्म लिये रहता है, तभी पता चलता है कैसे चल चल कर आप हमारे लिये रहगुज़र बनाते हैं। अपने जीवन से इतना भव्य, सुन्दर व विलक्षण इतिहास रचते ही चले जाते हैं, जो सदियों से उतना ही सनातन था, जितना आज है! परम अखण्ड है यह!

हे कृपालु दयालु जगद् जननी माँ, आप 'मैं' की पट्टी खोल कर व अहंकार को चोटी से उतार कर ही, अपनी दिव्य दृष्टि से नवाज़ कर अपने दिव्य दर्शन देते हैं।

आप माँ प्रभु जी मान्यताओं का भंजन नहीं करते। वह तो आपके आश्चर्यचकित करने वाले जीवन के आगे नतःश्री बारम्बार हुये इन मान्यताओं का भंजन देखते ही देखते स्वयं ही आपकी कृपा से होता चला जाता है। कैसे कैसे गुमराह हुये, राह पर आते जाते हैं पता भी नहीं चलता.. आप अप्रकट, स्वयं के सगुण वेश में अवतरित हो कर कैसे प्रकट करते चले जाते हैं। कैसे करूँ अपना आभार व्यक्त शब्दों में? यह एहसास कहाँ उतर पाता है.. बस, नख से शिख तक, हे माँ, पूर्णतया नतःश्री बारम्बार होते हुये आपके चरणरज सीस चढ़ा लेती हूँ और दुआ करती हूँ, 'जिस तरह आपने 'मैं' से मुक्त होने का आगाज़ किया है मेरे जीवन में.. उसकी अन्तिम आहुति भी हे श्री हरि नाथ, अपने ही हाथों से दीजियेगा.. जो यह आप में विश्राम पा जाये।' हरि ओऽम्।

हे मेरे कर्णधार, इस आंतर प्रवाह को केवल अपनी ओर ही प्रवाहित किये रहियेगा। जब तलक आप में पूर्णतया विलीन हो कर आप में विराम न पा जाऊँ। यही अनुनय विनय है आप माँ से मेरी, इसे बन्धन मुक्त कर दीजियेगा। आपके और मेरे बीच ऐसा कोई बन्धन न रहे जो मुझे आप में मिट कर मिलने न दे! युगों से इसी विरहा तपन में तपती आ रही हूँ.. आप प्रभु माँ ने ही उम्मीद की किरण से नवाज़ा है अपनी इस कनीज़ को। धन्य धन्य हुई रहती हूँ आपसे हे श्री हरि जगद जननी माँ, कोटि कोटि धन्यवाद माँ!

ऐ इलाही नूर, हे यारब, आप ही को सदक़ा जो आपके हज़ूर में यूँ ज़िन्दगी गुज़ारने का मौका मिल गया। ऐ ज़िन्दगी, मुबारिक हो तुझे! यारब, आपकी नज़र करके ही यह ज़िन्दगी गुज़रे.. जो भी पल गुज़रें, आपके कर्म से आप ही में गुज़रें इसी तरह।

कौन कहता है कि आप चले गए हैं.. मैं तो मानती ही नहीं। हर पल आप इस आंतर में ही तो रहते हैं, आपके कहे की गूँज सदा दस्तक देती है और चेता देती है कि मैं हूँ न तेरे अंग-संग.. बस ज़रा गर्दन झुका के देख ले! इस सत्य को कोई नहीं झुठला सकता, हर दिल के आंगन में आपके क़दम पड़े हुये हैं। मैं भी जिनको चूम कर मन ही मन प्रणाम कर लेती हूँ और इस हृदय में सँजोये हुये आप की वाणी के परम सत्य के फूलों की सुंगध को आंतर बाहर महसूस करती हूँ व मन ही मन इन्हें दोहरा कर इन्हें सँजोये रखती हूँ।

आप माँ ने कैसे सुन्दर फूल इस बगिया में खिलाये हैं जिन्हें इस क़दर आपने अपनी वाणी व प्यार से सींचा हुआ है कि उसकी महक आंतर बाहर बसी रहती है। यही मन ही मन तहेदिल से प्रार्थना करती रहती हूँ, याख़ुदाया, इस देन को जो परम पूज्य माँ ने अपने जीवन से दी है, वह कभी धरती पर न गिरे! आमीन। ❖

मन मेरे तू जान ले, ज्ञातव्य इक वह ही है..

गतांक से आगे..

द्वितीय मुण्डक/ द्वितीय खण्ड

आवि: संनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदमत्रैतत्समर्पितम् ।
एजत्प्राणन्निमिषच्च यदेतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ।।

मुण्डकोपनिषद् - 2/2/1

शब्दार्थ:

जो प्रकाश स्वरूप अत्यन्त समीपस्थ हृदयरूप गुहा में स्थित होने के कारण गुहाचर नाम से प्रसिद्ध और महान पद परम प्राप्य है; जितने भी चेष्टा करने वाले, श्वास लेने वाले और आँखों को खोलने-मूँदने वाले प्राणी हैं; ये सब के सब इसी में समर्पित, प्रतिष्ठित हैं। इस परमेश्वर को तुम लोग जानो, जो सत और असत है; सब के द्वारा वरण करने योग्य और अतिशय श्रेष्ठ है, तथा समस्त प्राणियों की बुद्धि से परे अर्थात् जानने में न आने वाला है ।

तत्व विस्तार:

विशुद्ध आत्म सत्ता जो, अधिष्ठान हिय में होता है ।
गुहाचर उसे कहते हैं, वा धाम यही तो होता है ।।1।।

हिय लोक में परम बसे, मन वहीं ले जाइये ।
वृत्ति पुंज यह मौन कर, मौन में दर्शन पाइये ।।2।।

आन्तर निहित सार समझ, शब्दन् में न भरमा जाइयो।
अचिन्त्य तत्व है लक्ष्य तेरा, समझ शब्द सों उठ जाइयो ।।3।।

परम चेतन शक्ति वह, प्रकाश स्वरूप रे कहते हैं।
दीप्यमान सब जग करे, ज्योति स्वरूप रे कहते हैं ।।4।।

उत्पत्ति स्थिति लय कारण, एक उसे ही कहते हैं।
सर्व प्रकाशक वह ही है, जीवन तत्व रे कहते हैं ।।5।।

महा समीपस्थ है वह, गुहाचर नाम वह देते हैं।
हृदय गुहा में वास करे, हृदयवासी कहे देते हैं ।।6।।

आत्म तत्व स्वरूप जो, तन सों भी समीप रे है।
तन आये रे तन जाये, नित्य तत्व नित्य ही है ।।7।।

अनेक तन आयें जायें, कर्म नित्य नव रूप धरे।
आत्म तत्व आत्म रूप, का तो केवल बिम्ब पड़े ।।8।।

सर्वोपरि सर्वश्रेष्ठ वह, भूमा सर्व महान है वह।
शिव रूप वह ब्रह्म रूप, अखण्ड रूप महा तत्व है वह ।।9।।

प्राप्तव्य इक वह ही है, ज्ञातव्य इक वह ही है।
परम पद परम धाम, परम सत्त्व इक वह ही है ।।10।।

पूर्ण चेष्टा कर प्राणी, श्वास पर श्वास जो ले।
नयन मूँदे या खोल ले, जो क्रिया भी जो करे ।।11।।

परम में सब समर्पित है, सर्वाधार वह ही है।
पूर्ण रूप अकर्ता जो, सर्वकर्ता रे वह ही है ।।12।।

सर्व समर्पित उसी पे है, उसपे आश्रित है जान ले।
हर काज कर्म बस परम करे, निहितार्थ यह जान ले ।।13।।

उसी में स्थित रे सारे हैं, उससों उसके ही तो हैं।
आवागमन यह जग विचरण, मनो प्रवाह उसके ही हैं ।।14।।

पूर्ण रूपेण समर्पित है, कर्तृत्व भाव ही रहा कहाँ।
जन्म सों उस पर अर्पित है, अपना भाव ही रहा कहाँ ।।15।।

परम आश्रय वह ही है, एक आधार रे वह ही है।
अनुमन्ता ईषण कर्ता, कर्म कर्ता रे वह ही है ।।16।।

वह अधिभूत वह अधियज्ञ, अधिदेव रे वह ही है।
भाव प्रवाह और भावी भी, भाव रहित वह ही है ।।17।।

तन स्वभाव कर्माशय, कर्मातीत रे वह ही है।
विराट रूप हिरण्यगर्भ, ईश्वर सत्ता वह ही है ।।18।।

मन मेरे तू जान ले, ज्ञातव्य इक वह ही है।
सर्व उच्च बस एक लक्ष्य, प्राप्तव्य इक वह ही है ।।19।।

सत असत रे जो भी है, अखण्ड रस इक वह ही है।
वरद वह वरणीय वह, पूज्यनीय इक वह ही है ।।20।।

सर्वोत्तम वह सर्वश्रेष्ठ, अखण्ड सत रे वह ही है।
सर्वोपरि परम अधिष्ठान, महानतम रे वह ही है ।।21।।

बुद्धि सों वह है परे, अचिन्त्य तत्व रे वह ही है।
इन्द्रिय गण सों बहु परे, अग्राह्य सत्त्व रे वह ही है ।।22।।

उसको कौन रे जान सके, ज्ञान स्वरूप रे वह ही है।
को' जाने क्योंकर जाने, अखण्ड रूप जब वह ही है ।।23।।

हिय गुहा प्रतिष्ठित वह, जीव कोण से कहते हैं।
हिय स्थित बस राम हैं, राम कहे बस कहते हैं ।।24।।

हर चेष्टा रे उसकी है, इन्द्रिय कर्म रे उसका है।
नयनन् में हर अंग में, प्रतिष्ठा बस उसकी है ।।25।।

स्थूल सूक्ष्म रूप जो, कारण भी रे वह ही है।
पूर्ण जग को देख कहें, धारण भी रे वह ही है ।।26।।

गुहाचर वा नाम धरें, गुहावासी उसे कहें।
हिय गुहा में जाये करी, उसको मन रे जान ले ।।27।।

सूक्ष्म सार रे जान ले, किस विध गुहा में जाये।
तनो आवरण रे मनो आवरण, बुद्धि त्यज के जो पाये ।।28।।

यह वस्त्र त्यागने ही होगें, परम मिलन का बेला है।
तन मिलन का नहीं नहीं, आत्म मिलन का बेला है ।।29।।

जीवत्व भाव से उठ करी, मौन में ही जब आ बैठे।
मौन मिले महा मौन से, मन पूर्ण गँवा बैठे ।।30।।

अन्तिम मिलन रे यह ही है, परम मिलकर बिछुड़न न हो।
समझ सको तो यूँ समझो, मन प्रदुर पुनः न हो ।।31।।

वरद वह वरेण्यम भी, पर आप वरे तो वर सको।
लक्ष्य यही अरे राहें भी, गमन राह भी वह ही हो ।।32।।

बुद्धि से न जान सको, बुद्धि प्राप्तव्य वह नहीं नहीं।
मन से न पहचान सको, मनो प्राप्तव्य वह नहीं नहीं ।।33।।

आत्म से ही जान सको, मौन उसी का नाम है।
मौन से भी परम परे, परम मौन वा नाम है ।।34।।

घुँघटा जब उठ जाये, तभी तो मुखड़ा देख सके।
तन मन घूँघट जो उठे, परम मिलन तो ही होये ।।35।।

जीव मिलन जिसे समझे है, वह मिलन है नहीं नहीं।
तनो मिलन अरे जान ले, परम मिलन है नहीं नहीं ।।36।।

मन्दिर में जब जाते हो, तन मन संग ही जाये है।
बुद्धि से साधक बनी, वा की आरती गाये है ।।37।।

बिन पाये रे बिन मिले, मन्दिर से जो आये हैं।
अहम लिये था वहाँ गया, अहम लिये आ जाये हैं ।।38।।

गर उसको रे मिलना है, हृदय मन्दिरा आ जाये।
अहम मन यह भाव त्यजी, मौन रूप धरी आ जाये ।।39।।

बुद्धि वहाँ क्या पहुँचेगी, बाह्य जग निर्णायक यह।
आन्तर में मेरे राम बसे, वहाँ तलक न पहुँचे यह ।।40।।

वृत्ति रूप कंकर रे जो, राहों में हैं पड़े हुये।
बुद्धि कहे इन्साफ़ करो, विद्या रूप हैं धरे हुये ।।41।।

राम द्वार पे तुम कहो, बुद्धि खड़ी रे रहती है।
किस विध उससों मिलना हो, स्पष्ट रूप से कहती है ।।42।।

आन्तर नहीं यह जा सके, बाहर ही रह जाती है।
राम द्वार यह बुद्धि तेरी, देखे छोड़े यह जाती है ।।43।।

मन मिटे बुद्धि मिटे, भाव प्रवाह न रहे।
मौन तभी रे जानिये, एको चाह भी न रहे ।।44।।

वा दासी बुद्धि जानी, वा पे लग्न भी नहीं रे हो।
बुद्धि बल से जा पहुँचे, साधक अब तो नहीं कहो ।।45।।

विज्ञान तलक बुद्धि जाये, आगे जाये नहीं नहीं।
आनन्दमय रे जिसे कहें, परे रे जाये नहीं नहीं ।।46।।

आनन्द परे मेरे राम बसे, बुद्धि क्योंकर जा सके।
मन बुद्धि जो छोड़ दे, अहम रहित ही पा सके ।।47।।

नितान्त अहम अभाव हो, परम मिलन हो जायेगा।
स्वरूप सों ही रे मिलना है, स्वरूप स्थित हो जायेगा ।।48।।

पर अपने आप से मिलना क्या, अनित्य भाव तू छोड़ दे।
जो है सब रह जायेगा, जो नहीं उसे ही छोड़ दे ।।49।।

वह महा मौन वह कर्मातीत, वह गुणातीत रे आप है।
अखण्ड रस महानतम, कालातीत वह आप है ।।50।।

मन ही जिस पल नहीं रहे, अखण्ड तो ही तो जान ले।
अद्वैत में रे स्थित होई, अद्वैत तो ही जान ले ।।51।।

पर ज्ञान जिसे रे कहते हैं, वह दूजे ही रे होता है।
या कहूँ यह ज्ञान रे, द्वैत में ही होता है ।।52।।

अद्वैत में रे ज्ञान कहाँ, किससे ज्ञान का मिलना हो।
एक एक जब एक हुये, एक ज्ञान रे एक हो ।।53।।

महा मौन ही हो जाये, स्वरूप जिस पल जान ले।
आत्म में ही खो जाये, अपने आप को जान ले ।।54।।

17-9-61

बुद्धि पर आवरण कोई नहीं रहा,
वह तो निरासक्त हो गया..

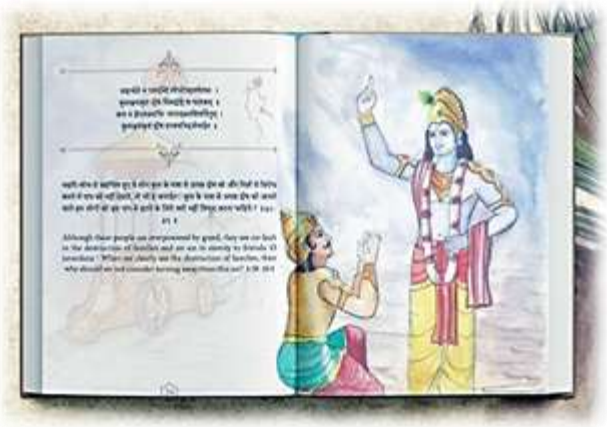

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 2/63

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. **क्रोध से सम्मोह उत्पन्न होता है,**
2. **सम्मोह से स्मरण शक्ति विभ्रान्त हो जाती है,**
3. **स्मृति के विभ्रान्त हो जाने से बुद्धि नष्ट हो जाती है**
4. **और बुद्धि के नाश होने से जीव स्वयं नष्ट हो जाता है ।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं! सम्मोह को समझ ले ।

सम्मोह का अर्थ है :

क) विभ्रान्ति,

ख) विमूढ़ता,

ग) मूर्छा,

घ) बहक जाना,

ङ) अज्ञानता,

च) अविवेक,

छ) यानि, जब सत्यता जान ही नहीं सके,

ज) यानि, जब सत्य और असत्य में भेद भी समझ न आये ।

भगवान कहते हैं जब जीव क्रोध से भड़क उठता है तब वह :

1. विभ्रान्त मन वाला हो जाता है ।
2. घबराहट पूर्ण हो जाता है ।
3. अविवेकी बन जाता है ।
4. तब उसकी समझ ठीक नहीं रहती ।

फिर कहते हैं, क्रोध के कारण और सम्मोह के कारण उसकी स्मृति का नाश हो जाता है।

स्मृति नाश (**स्मृतिविभ्रमः**) को अब समझ ले :

क्रोध से सम्मोहित हुए जीव को :

1. अपनी स्थिति याद नहीं रहती।
2. दूसरा बड़ा है या छोटा, यह याद नहीं रहता।
3. अपना सम्पूर्ण ज्ञान भूल जाता है।
4. दूसरों की बातें भी भूल जाता है।
5. सब वायदे भूल जाते हैं।
6. लोक लाज भी भूल जाती है।
7. कुल मर्यादा भी भूल जाती है।
8. इन्सानियत भी भूल जाती है।
9. सम्पूर्ण ज्ञान भी भूल जाता है।
10. दूसरों से जो लाभ हुआ, वह सब भी भूल जाता है।
11. दूसरे के प्रति जो उसमें कृतज्ञता होनी चाहिये, वह भी भूल जाती है।

भगवान कहते हैं, फिर यदि जिसकी स्मृति ही नहीं रही, उसकी बुद्धि का नाश हो जाता है। जब बुद्धि ही नष्ट हो जाये तब:

1. सत और असत, उचित और अनुचित, शुभ और अशुभ का निर्णय कैसे हो?
2. श्रेय तथा प्रेय पूर्ण कर्मों का निर्णय कैसे हो?

3. क्या करना चाहये और क्या नहीं करना चाहिये, इसकी भी होश नहीं रहती।
4. धर्म और अधर्म में भेद समझ नहीं आता।
5. जब बुद्धि का नाश हो जाता है तो कर्तव्य तथा अकर्तव्य में भेद नज़र नहीं आता।

जिसकी बुद्धि नष्ट हो चुकी हो वह :

क) जो भी ज़ुबान पर आये, बिना सोचे बोलने लगता है।

ख) जो भी सामने आये, बिन सोचे उससे भिड़ जाता है।

ग) जो भी सामने आये, उसे तोड़ देता है। क्रोध अग्न में अपनी बुद्धि तो मानो जल चुकी है, अब वह दूसरों को भी जलाना चाहता है।

ऐसा इन्सान अपनी इन्सानियत को नष्ट कर देता है और जब इन्सानियत ही नहीं रही तब वह इन्सान इन्सान ही नहीं रहा।

नन्हीं! अजब तमाशा तो यह है कि बेचारा अपनी चाहना को पूर्ण करने चला था और ख़ुद ही खो गया।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 2/64

अब भगवान कहते हैं कि अर्जुन, विषयों में कोई दोष नहीं होता।

शब्दार्थ :

1. **वशवर्ती मन वाला पुरुष,**
2. **राग द्वेष से रहित हुआ**
3. **और वश में की हुई इन्द्रियों से,**
4. **विषयों को भोगता हुआ भी,**
5. **प्रसाद को प्राप्त होता है।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं! विधेयात्मा को प्रथम समझ ले।

विधेयात्मा का अर्थ है :

1. जिसका अनुष्ठान उचित हो,
2. आज्ञा पालक,
3. वश में रहने वाला,
4. जो अपने अधीन हो,
5. जो विनम्र अनुचर हो।

भगवान कहते हैं, जो जीव राग द्वेष से रहित है, जिसकी इन्द्रियाँ अपने वश में हैं और जिसका मन बुद्धि की आज्ञा का अनुसरण करता है, वह पुरुष सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषय भोगता हुआ भी परम प्रसाद को पाता है।

नन्हीं! प्रसाद का अर्थ यहाँ समझ लेना उचित होगा।

प्रसाद :

1. प्रसाद यज्ञशेष को कहते हैं।
2. कर्तव्य करते हुए जो सुखकारक गुण आपको मिलते हैं, वह गुण प्रसाद है।
3. शुभ तथा पुण्य कर्म के परिणामस्वरूप मन को जो शान्ति मिलती है, उसको प्रसाद कहते हैं।
4. भगवान के चरणों में अपने आपको अर्पित करने से नित्य आनन्द रूप प्रसाद मिलता है।
5. निष्काम भाव से कर्म करने से जीव को करुणा, दया, दक्षता रूप प्रसाद मिलता है।
6. राग द्वेष रहितता का प्रसाद शुद्ध चित्त तथा समत्व भाव है। यानि, जो जीव राग द्वेष

से रहित होते हैं और कर्तव्य परायण होते हैं, वे दैवी गुण रूप प्रसाद पाते हैं। वे तो स्वयं संसार में लोगों के लिये एक प्रसाद ही होते हैं क्योंकि वे :

क. निष्काम सेवा करते हुए अपना जीवन यज्ञमय बनाते हैं।

ख. उनकी निष्काम सेवा का फल संसार को ही मिलता है।

ग. संसार में दुःख तथा आततायियों से हराये गये लोगों के तो यह नित्य संरक्षक तथा सेवादार होते हैं।

घ. लोगों के लिये तो यह नित्य भागवत् प्रसाद रूप ही होते हैं।

ऐसे लोग, जो अपने लिये कुछ नहीं करते, वे सम्पूर्ण विषयों का भोग करते हुए भी विषयों से लिपायमान नहीं होते।

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥

श्रीमद्भगवद्गीता - 2/65

अब भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. **उस प्रसाद के मिलने से**
2. **इनके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है।**
3. **प्रसन्नचित्त वाले पुरुष की बुद्धि**
4. **शीघ्र ही स्थिर हो जाती है।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं जान्! भगवान कहते हैं कि प्रसाद से दुःख का अभाव हो जाता है।

क) ये लोग भागवद् परायण होते हैं और इनका ध्यान भगवान में टिका हुआ होता है। अपने सुख दुःख देखने की इनके पास फ़ुर्सत ही नहीं होती।

ख) ये अपने तन को भूल कर निष्काम भाव से कर्तव्य करते हैं।

ग) ज्यों ज्यों अपने तन से संग मिटने लगता है त्यों त्यों तन के दुःख इत्यादि पर ध्यान ही नहीं जाता।

घ) जब तन ही अपना नहीं रहता तो संसार में अपने लिये प्राप्तव्य भी कुछ नहीं रहता।

ङ) जब प्राप्तव्य ही कुछ नहीं रहे तो मन चाहना भी किसकी करे? फिर जब चाहना ही कोई नहीं रहती तो मन के सब गिले शिकवे बन्द हो जाते हैं।

च) जब तन से नाता नहीं रहता, तन को शुभ मिला या अशुभ मिला, इसकी परवाह कौन करे ?

छ) भागवद् प्रेम के कारण वे अपने तन के प्रति उदासीनता रूपा प्रसाद पा चुके होते हैं।

ज) परमात्मा में लग्न ज्यों ज्यों बढ़ने लगती है, उसके अनुरूप वह देहात्म बुद्धि से परे होने लगते हैं और उसी के अनुरूप

आनन्दमनी होने लगते हैं। ऐसे आनन्दमय जीवन की बुद्धि शीघ्र ही स्थिर हो जाती है। तनोसंग के कारण ही मोह उठता था जो बुद्धि को आवृत करता था। अब तन से ही संग नहीं रहा तो :

1. मोह का मूल ही सूख जाता है।
2. तनो इन्द्रियों से भी संग नहीं रहता।
3. विषयों से भी संग नहीं रहता।
4. कोई कामना भी नहीं रहती।

वह तो नित्य तृप्त हो गया। उसकी बुद्धि पर आवरण कोई नहीं रहा, वह तो निरासक्त हो गया। निर्दोष तो वह स्वतः ही हो गया। उसकी नित्य अप्रभावित बुद्धि स्थिर ही होती है।

नन्हीं! यदि अपना कोई प्रयोजन हो तब बुद्धि आवृत हो जाती है। जब अपना प्रयोजन कोई है ही नहीं तो बुद्धि निरपेक्ष ही रहती है। जब अपना ध्यान ही नहीं रहे तब बुद्धि सत्पूर्ण न्याय कर सकेगी।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 2/66

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. **अयुक्त पुरुष के पास बुद्धि नहीं होती,**
2. **और अयुक्त पुरुष के पास भावना भी नहीं होती।**
3. **बिना आस्तिक भाव के पुरुष को शान्ति भी नहीं होती।**
4. **फिर शान्ति रहित पुरुष को सुख कैसे मिल सकता है?**

तत्व विस्तार :

अयुक्त का अर्थ पहले समझ ले!

अयुक्त का अर्थ है :

1. अनुपयुक्त।
2. जो युक्ति शून्य हो।
3. जो अनुचित हो।
4. जो ध्यान रहित हो।
5. जो विषयों से आसक्त हो।

भगवान यहाँ कहते हैं कि अयुक्त पुरुष के पास बुद्धि नहीं होती।

नन्हीं! ठीक ही तो कहते हैं।

बुद्धि :

क) निर्णयात्मिका शक्ति को बुद्धि कहते हैं।
ख) निश्चयात्मिका शक्ति को बुद्धि कहते हैं।
ग) समझने और विचार करने की शक्ति को बुद्धि कहते हैं।
घ) सत जानने के लिये जो सूक्ष्म आवरण भी उतार सके, उसे बुद्धि कहते हैं।
ङ) जो निहित वास्तविकता को दर्शाये, उसे बुद्धि कहते हैं।
च) जो द्वौ पक्ष को निरपेक्ष भाव से देख कर जान सके, उसे बुद्धि कहते हैं।

छ) जो नित्य ज्ञान विज्ञान वर्धक हो, उसे बुद्धि कहते हैं।

नन्हीं! धर्म के अनुष्ठान का सर्वोपरि परिणाम बुद्धि ही है।

1. अयुक्त पुरुष, जो हर कामना की इन्द्रिय रसना में लिप्त रहता है, उसके पास वह बुद्धि कैसे हो सकती है?
2. राग द्वेष पूर्ण पुरुष के पास सत दर्शी बुद्धि कैसे हो सकती है?
3. अहंकार, दम्भ और दर्प पूर्ण जीव बुद्धि के रहित ही होता है।

नन्हीं! पक्षपाती जीव के पास बुद्धि नहीं होती।

जीवन में लोग बहुत चतुर, दक्ष, प्रवीण तथा बड़े बड़े काज करने वाले भी होते हैं, बहुत धन कमाते हैं, बहुत सुन्दर योजनायें भी बनाते हैं और उन्हें पूरा भी करते हैं तो क्या इन लोगों के पास बुद्धि है? जो संसार में इतनी जटिल समस्याओं का हल कर देते हैं, क्या उनके पास बुद्धि है?

नन्हीं! बुद्धि वह होती है जो जीव को :

1. शान्ति दे।
2. आनन्द दे।
3. शोक तथा क्षोभ से परे कर दे।
4. नित्य तृप्त करा दे।
5. इन्सानियत उत्पन्न करे।
6. सुन्दरता की ओर ले जाये।
7. श्रेष्ठ बना दे।
8. विश्वसनीय बना दे।
9. पुरुष से पुरुषोत्तम बना दे।
10. दुःख व्याकुलता से निजात दिला दे।
11. उद्विग्नता से विमुक्त करा दे।
12. द्वन्द्वों से मुक्त करा दे।

हर जीव की निहित मांग :

संसार में इन्सान जो भी करता है, वह किसी स्थिति की प्राप्ति के लिये करता है। निहित चाहना हर इन्सान की यही होती है कि उसे जहान से श्रेष्ठतम होने का सम्मान मिले और वह नित्य आनन्द में रहे।

नन्हीं! इसी को पाने के लिये विभ्रान्त बुद्धि संसार के पीछे जाती है और विभिन्न विषयों को उपार्जित करना चाहती है। धन का महत्व भी इसी में है कि वह सांसारिक विषयों को खरीद सकता है। बुद्धि तो हम उसे कहेंगे जो हमारी ही इस निहित अतृप्त चाहना को तृप्त कर दे।

सम्पूर्ण विषय प्राप्ति भी हमें आनन्द नहीं दे सकती :

1. संसार के सम्पूर्ण विषय भी हमें मिल जायें तब भी नित्य तृप्त का आनन्द हमें नहीं मिलेगा।
2. संसार के सम्पूर्ण विषय भी जीव को दुःख, क्षोभ, व्याकुलता, निराशा इत्यादि के दर्द से विमुक्त नहीं कर सकते।
3. संसार के सम्पूर्ण विषय भी जीव को नित्य आनन्दमय स्थिति नहीं दे सकते।
4. सम्पूर्ण संसार का आधिपत्य भी जीव को श्रेष्ठतम नहीं बना सकता।

5. सम्पूर्ण संसार का आधिपत्य तथा धन भी जीव को मिल जाये तो भी जीव अतृप्त का अतृप्त ही रह जायेगा।

इस कारण जो बुद्धि जीव को जीव की नित्य तृप्ति तथा आनन्द और अमर नाम की चाहना की पूर्ति के लिये विषय उपार्जन की ओर प्रेरित करती है, वह वास्तव में बुद्धि नहीं हो सकती। इसका तुम यह अर्थ मत लेना कि-

क) जो संसार को छोड़ देते हैं, उनके पास वास्तविक बुद्धि है।

ख) जो संसार को मिथ्या कहते हैं, उनके पास कोई बुद्धि है।

ग) जो संसार से पिण्ड छुड़ाने की बात कहते हैं, उनके पास बुद्धि होती है।

घ) संसार के कार्य कर्म छोड़ देने से यह बुद्धि उत्पन्न होती है।

ङ) जो संसार में काज कर्म करता है वह बुद्धि हीन हो जाता है।

बुद्धि वह होनी चाहिये जो सम्पूर्ण कर्तव्य तथा काज करते हुए आपको नित्य तृप्त, आनन्द स्वरूप बना सके और अमरत्व भी दिला सके।

अब बुद्धि को यह देखना है कि वह :

1. नित्य तृप्ति कैसे पा सकती है?
2. नित्य आनन्द कैसे पा सकती है?
3. नित्य अमरत्व कैसे पा सकती है?

इस स्थिति को पाने की राह शास्त्र बताते हैं। इस स्थिति को पाने की राह बताने के लिये भगवान का बार बार जन्म होता है। इस स्थिति का वर्णन तथा उपलब्धि की विधि ही भगवान कृष्ण समझा रहे हैं। योग इसी स्थिति का नाम है। नित्य आनन्द, नित्य तृप्ति, नित्य स्वतंत्रता और नित्य अमरत्व, योग का परिणाम है।

भगवान समझा रहे हैं कि तू तन नहीं है, आत्मा है। गर तू तन की जगह आत्मा से योग कर ले तो इक पल में तेरे जन्म जन्म की अतृप्त चाहना तृप्त हो जाये। तब तू स्वतंत्र, आनन्द स्वरूप और परम पुरुष हो जाये।

अब सोचना तो आपकी बुद्धि ने ही है। पहले देख लो, आपका लाभ क्या है, और आप इसे कैसे पा सकती हैं? बुद्धि तो उसे कहेंगे जो एक ओर अपनी मान्यता को रख दे और दूसरी ओर, जो भगवान ने कहा है उसको, फिर निरपेक्ष भाव से निर्णय लेकर, अपने ही निर्णय का जीवन में अनुसरण करे। यदि आपके बुद्धि रूपा न्यायालय में भगवान जीत गये तो आप भगवान के कहे पथ पर चल रहे हैं।

नन्हीं मेरी लाडली जान्! भगवान ही ठीक हैं और भगवान का कहा मानना उचित है। जो बुद्धि आपको भगवान के नक्शे कदम पर ले जाये, उसे युक्त बुद्धि मानिये। जो भगवान के कहे को भी ग़लत ठहराये, उसे बुद्धि कौन माने?

यह कह कर भगवान कहते हैं, 'अयुक्त, विषयानुरक्त जीव के पास तो यह भावना नहीं होती, उसे शान्ति कहाँ मिल सकती है? और शान्ति रहित को सुख कैसे मिल सकता है?' यह कहकर भगवान कह रहे हैं कि जिन्हें विषयों ने अन्धा कर रखा है, यानि जो केवल

विषयासक्त हुए हैं, जो केवल विषय उपार्जन में ही निरन्तर लगे रहते हैं, जो केवल विषयों के ही पुजारी हैं, जो केवल विषयों के ही भिखारी हैं, जिनकी इन्द्रियाँ विषयों की चाकर बनी रहती हैं, विषय ही जिन लोगों के ठाकुर बन चुके हैं, उन लोगों के पास तो भावना भी नहीं होती। वे तो तम प्रधान, जड़ तथा अप्रकाशमय होते हैं।

नन्हीं! अब भावना को ध्यान से समझ ले।

भावना :

1. भावना आत्मा निर्दोष कारक वृत्ति को कहते हैं।
2. भावना, अपने आपको न्याययुक्त प्रमाणित करने की वृत्ति को कहते हैं।
3. कल्पना आधारित तर्क वितर्क करके आपने जो किया है, उसे उचित सिद्ध करने की विधि ही भावना है।
4. भावना प्रधान लोगों की महत्वपूर्ण बात यह है कि वह सिद्धान्तों का आसरा लेकर अपने आपको निर्दोष सिद्ध करते हैं।
5. भावना पूर्ण लोग अधिकांश उचित कर्म करते हैं और अपने आपको सत पथ पर ही रखना चाहते हैं, किन्तु देहात्म बुद्धि होने के कारण सिद्धान्तों को अनेक बार समझ नहीं पाते। जैसे:

अर्जुन ने भी सिद्धान्तों को ग़लत अर्थ देकर युद्ध से उपराम होने का यत्न किया था। बातें उसने सब ठीक ही कहीं थीं, किन्तु उन बातों का जीवन में विज्ञान रूप प्रयोग ग़लत करने लगा था।

क) गुरु और बुज़ुर्गों की सेवा सुश्रूषा करनी ही चाहिये।

ख) गुरु और बुज़ुर्गों की आज्ञा का पालन करना ही चाहिये।

यह दोनों सिद्धान्त हैं, यह दोनों बातें उचित हैं। किन्तु भगवान गीता में समझा रहे हैं कि यदि ये भी आततायियों के सहयोगी हो जायें तो इनसे भी युद्ध करना उचित है। जीव का कर्तव्य 'इन्सान' के प्रति नहीं होता, 'इन्सानियत' के प्रति होता है।

इसी श्लोक में भगवान कहते हैं कि जिन लोगों के पास न ही बुद्धि है और न ही भावना है, वे तो पूर्ण रूप से अविचारशील हुए अन्धे लोग हैं। वे तो तर्क वितर्क शून्य अन्धकार पूर्ण जहान में रहते हैं। वे तो ज़िद्दी, शठ और मूर्ख लोग हैं। ये अपने किसी भी निर्णय को अन्यायपूर्ण या ग़लत मानना ही नहीं चाहते। ऐसे लोगों को शान्ति और सुख कभी नहीं मिल सकता।

भाई! ये लोग तो आसुरी सम्पदा पूर्ण होते हैं। ये अहंकार, दम्भ और दर्प में फंसे हुए लोग न्याय, दया और धर्म को पहचानते ही नहीं।❖

श्रद्धा सुमन

सुश्री छोटे माँ
(पूर्व संकलन)

परम पूज्य आराध्य माँ का इस जीवन में सम्पर्क मेरे जीवन की सर्वोच्च, सर्वोत्कृष्ट परम निधि है, जिनकी कृपा से मुझे अपने जीवन में, 'नाम की महिमा' का प्रसाद मिला है। आज अपने इस दीर्घकालीन कृपा के प्रसाद का पान करते करते ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सच ही दुराचारी जीव, जिसका पाषाण हृदय हो और जो स्वार्थ की प्रतिमा हो, वह भी जीवन में उपासना राही, ज्ञान को विज्ञान रूप में प्राप्त करके अपने जीवन की मल धो सकता है।

आज चहुँ ओर जब दृष्टि उठा कर देखती हूँ, तो ऐसा प्रतीत होता है कि मैं तो घोर निद्रा में, अपनी 'मैं' की चादर डाल कर सोई हुई थी। पूज्य माँ ने 'राम नाम' की लोरियाँ सुना कर, दिव्य आहार खिला कर, जीवन के हर पहलू के रंग ढंग को ही बदल दिया। क्यों न कहूँ वह तो भगवान के चरणों में बैठे थे, मुझे सौभाग्यवश श्रवण करने का प्रसाद मिला।

आज ऐसा प्रतीत होता है कि मैं यदि जन्म-जन्मांतर तक भी अपनी वृत्तियों के पत्ते काटती रहती, तो वह कभी भी जड़ से न उखड़ते और हर बार बरसात के आते ही फिर से हरे हो जाते। परम पूज्य माँ के श्री मुख से प्रवाहित अभंग स्वतः स्फुरित रस का पान करते करते तथा उस प्रवाह के स्रोत परम पूज्य माँ के जीवन में दिव्य प्रमाण देखते देखते, मेरी 'मैं' जो अपने आरोपित अहंकार में बैठी बाण चलाती जा रही थी, वह भी थक कर शांत हो गई। सच ही आज स्वयं 'मैं' अपने पर कृपा करके परम पूज्य माँ को 'तिलक' लगाने के लिये तड़प उठी है। धन्य हैं माँ, जिनका जीवन एक अखण्ड मौन का प्रमाण है। इस दिव्य प्रसाद की कृपा से आज शास्त्रों का गुह्य रहस्य खुल रहा है।

याद आता है कि बचपन में, पूज्य माँ मुझे हँसते हुए कहा करते थे, 'तू एक दिन मारते मारते थक जायेगी, जब कोई खाते खाते नहीं थकेगा.. तब शायद तेरा भाव थक कर पुकार उठे।' उस काल में तो यह बात मुझे समझ नहीं आती थी। मैं अपने अहंकार में खोई हुई कुछ देखती ही नहीं थी। यह सोच कर भी, आज आश्चर्य होता है कि मैं कैसे अपने आप को बहुत योग्य, विद्वान व गुणवान समझती थी। पूज्य माँ के सहज दिव्य प्यार को पाकर यही समझती रही कि मुझमें ही कोई गुण होगा, इसी कारण तो मुझे इतना प्यार मिला है। मैं दिव्य चाकरी के सहज स्वभाव को कभी भी पहचान न सकी।

आज ऐसा प्रतीत होता है कि शास्त्रों का अखण्ड सत्य वाक् ही अमर सत्य है। विजय सत्य की होती है, झूठ की नहीं। पूज्य माँ की करुणा का प्रसाद मिल रहा है। माँ हर प्रकार के राक्षसी वृत्तियों के प्रहार ग्रहण करके भी, उसी प्रकार से सहज ही करुणा वर्षा का प्रसाद दे रहे हैं। आज घनघोर कालिमा की घटा भी शांत हो रही है। एक ओर तो अपने कर्म तीनों स्तरों पर दीख रहे हैं और दूसरी ओर, शास्त्रों की वाङ्मय प्रतिमा के रूप में परम पूज्य माँ का परम पावनी प्रमाण हर पल मिल रहा है। उन्हीं के अभंग स्वतः स्फुरित प्रवाह 'उर्वशी' की दिव्य दृष्टि के द्वारा सत्यता के दर्शन हो रहे हैं और मल धुलती जा रही है।

अब प्रत्यक्ष अनुभव सहित दीख रहा है कि भगवान ने गीता में बारम्बार **'मय्यर्पितमनोबुद्धि', 'मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु,' 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज,'** क्यों कहा है? क्योंकि यह परम पावनी तत्व, मल धोने का रहस्य आँख खोल कर दीख रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अपना मन और बुद्धि तो उस परम ज्योति को आंतर में आने नहीं दे रहे थे। वही सबसे भयानक अंधकारमय बंधन राहों में आ रहा था, जिसके कारण मैं जन्म-जन्मांतर से अधोगति की खाड़ी में गिरती जा रही थी।

अब भगवान की कृपा प्रकाश से चहुँ ओर दीख रहा है कि मेरी तो नयनन् पुतरी ही विपरीत थी। हर शब्द के अर्थ भी मन तक पहुँच कर केवल स्थूल रूप धारण कर रहे थे। उस बहिर्मुखी दृष्टि के कारण मन, बुद्धि अपनी योग्यतानुसार विभिन्न अर्थ दे रहे थे, उस अग्राह्य को वह कैसे ग्रहण करते? अचिन्त्य को चिंतन में कैसे लाते? सब कुछ ही बदल चुका था।

आज परम पूज्य माँ से हमें अभंग स्फुरित ज्ञान तथा गत 40 वर्ष से जीवन में उस विज्ञान रूप का दिव्य प्रमाण मिल रहा है। उस साकार दर्शन को अहर्निश विभिन्न परिस्थितियों में पाकर प्रत्यक्ष दीख रहा है कि यही सत है, यही ज्ञातव्य है और यही प्राप्तव्य है। सो उस प्रकाश में जिस ओर भी दृष्टिपात करें, उस दर्शन का अनूठा प्रसाद मिल रहा है। ❖

भले बुरे सो तेरे

डॉ. जे. के. महता

(पूर्व संकलन)

मुझे बचपन से भगवान के चरणों में उपरोक्त भाव धरने का बहुत शौक था और इस के साथ ही 'प्रभु जी मेरे अवगुण चित् न धरो' ऐसे भाव भगवान के चरणों में बहा कर बहुत सुख और चैन मिलता था। मेरा दृढ़ विश्वास था कि मुझे कुछ नहीं करना, भगवान आप ही सब कुछ करते हैं।

अर्पण किसे कहते हैं, यह तो मैं जानता ही नहीं था। पिछले 36 वर्षों से परम पूज्य माँ के जीवन का अति समीप से दर्शन करने का सौभाग्य मुझे मिल रहा है। आज मैं यह देख रहा हूँ पूज्य माँ का जीवन भगवान के चरणों में पूर्ण रूपेण अर्पित है, उनका अपना कुछ भी तो नहीं है। उनका जीवन निरन्तर गंगावत् दैवी गुणों का एक अखण्ड प्रवाह है। उनके सम्पर्क में जो भी आता है, चाहे वह मित्र है या शत्रु, संत है या दुष्ट, उसके अवगुणों पर चित्त धरे बिना उसके प्रति उनके हृदय से केवल प्रेम ही बहता है।

इस कारण हम उन्हें देवत्व की साकार, सजीव, सप्राण प्रतिमा मानते हैं। उनका जीवन जो सर्वथा निष्पाप है, जहाँ दोष दृष्टि का नितान्त अभाव है और जो सब के साथ तदरूप हो कर, उनकी मान्यता का भंजन किये बिना, उनके स्तर पर जाकर उनके हित में ही बहता है, जहाँ अपना कोई

लेशमात्र भी स्वार्थ नहीं है, पूज्य माँ ने इस जीवन को भगवान के चरणों में अर्पित किया। उनका भगवान के चरणों में चढ़ाव उनके अपने इन शब्दों में प्रमाणित है :

नमो नमो कहते कहते, जी चाहे फूल चढ़ाने को।
राम मेरा अब जी चाहे, ख़ुद ही फूल बन जाने को॥

राम कृपा अब कर मुझ पे, मुझे फूल ही बन जाने दे।
फूल बनी कर राम मेरे, तव चरण पे चढ़ जाने दे॥

'मैं' और 'मेरा' मिट जाये, फिर राम ही बाक़ी रहे।
जिस जा राम यह देखा करे, वहाँ राम ही राम रहे॥

करुणापूर्ण तुझे कहूँ, मुझ पर भी करुणा कर जा।
जग में अरुणा होने लगी, मेरे हृदय में अरुणा बन आ॥

परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से बहा हुआ ज्ञान भी हमें उनके अपने जीवन में प्रमाण सहित मिला है। साधक अपने आन्तर से किसी भी सतोगुण के बहाव को अपनाता नहीं, वहाँ संग कर के अहं नहीं भरता - अपने कर्मों में ऐसे भाव का आ जाना वह भगवान के नाम पर कलंक समझता है। वह यह कलंक उनके चरणों में कैसे चढ़ा सकता है ? वह मानता है कि उसके आन्तर में से बह रहे दैवी गुण और दिव्य कर्म, सब भगवान की करनी है और यह कर्म उनके कर्म हैं। वह वहाँ संग लगा कर उन्हें अपना नहीं सकता।

'भले बुरे सो तेरे' तो वह भक्त ही कह सकता है, जिसमें बुराई का लेशमात्र नहीं है। वह अपने द्वारा दूसरे के हित में बहे हुए कर्मों और उन से उपार्जित सात्विक बुद्धि को भगवान की मानता है और उसकी 'मैं' उसे छू भी नहीं सकती।

साधक यदि अपने आसुरी गुणों को बुरे जान कर यह कहे, 'भगवान यह मैं तुझ पर छोड़ता हूँ, तू इन गुणों को बदल दे,' तब तो यह अपना आप ही बदलने के भाव से पलायनता है। यह तो अपने आपको बदलने के लिये भगवान की शरण नहीं गया, बल्कि अपने को दोष विमुक्त करने के लिये गया है।

सच्चा साधक यह भी जानता है कि भगवान की करुणा ही परिस्थितियों को निमित्त बना कर, उस में आसुरी गुण मिटा वहाँ दैवी गुण भर रही है, इस कारण वह अपने आन्तर में सात्त्विक गुणों के बहाव को अपना नहीं सकता - वह उसे भगवान के चरणों में धरता जाता है।

साधक तो अपने हर सात्त्विक गुण को भगवान के चरणों में चढ़ाता जाता है और अपने हर आवरण को अपना दोष जान कर उसे दूर करने का अनथक प्रयास करता है। यही तो उसकी साधना है। वह भगवान की शरण में जाकर आर्त भाव से शक्ति और प्रकाश माँगता है ताकि वह अपने आन्तर में अपने अवगुण देख कर उन्हें दूर कर सके।

साधक का सब से पहला लक्षण तो उसके अपने चित्त में भरे हुए आसुरी भाव रूपा मल का दर्शन है। वह अपने आपको दोष विमुक्त करने के लिये न तो दूसरों पर अपना दोष आरोपण करता है और न ही ज्ञान अथवा भावना का आसरा लेकर अपने आपको दोष विमुक्त करता है। वह तो सदा आन्तर्मुखी रहता है और हर परिस्थिति में अपने आन्तरिक मल को देख कर तड़प जाता है। जितना जितना वह शास्त्र ज्ञान का श्रवण अथवा मनन करता है, उतना उतना उसे अपना आन्तर दीखता है। भगवान को अपने अति समीप पाकर वह अपने आन्तर के इस मल रूपा आवरण को देखता है, जो उसे भगवान से दूर कर रहा है। उस का भाव तो पूज्य माँ के इन शब्दों में साकार होता है :

कौन मुखड़ा दिखाऊँ राम, पावन कबहुँ नहीं हुआ।
कौन कर से चरण छूऊँ, कोई पावन कर्म नहीं किया॥

वह अपने इस आवरण को दूर करने के लिये अपनी जान लड़ा देता है और इस लिये भगवान से हर पल करुणा और बल माँगता है।

उसके लिये पूरा संसार भगवान की करुणा बन जाता है जो भगवान ने उसे पावन करने के लिये दिया। यही ओम् के प्रथम पाद, उसके विराट रूप की उपासना की पहली कड़ी है। तत्पश्चात् उसका हर कर्म स्वतः ही दूसरे के हित में होता है। इसके परिणामस्वरूप अनेकों दैवी गुण, जो उसके आन्तर से बहते हैं, वही उसके जीवन के फूल हैं, जिन्हें पूजा के भाव से वह भगवान के चरणों में चढ़ाता जाता है।

भगवान की अपार करुणा से मुझे पूज्य माँ के तथाकथित साधना काल को बहुत नज़दीक से देखने का सुअवसर मिला। पाँच साल निरन्तर उनके जीवन राही सत दर्शन के पश्चात मैंने कहा, 'माँ आप तो शास्त्र की प्रतिमा हैं, आप का जीवन ही परम का प्रमाण है।' आज उनकी ही कृपा से यह जाना हूँ कि यह तो मेरे सदगुरु की परम कृपा थी। उन्होंने यह ज्ञान मुझे अपनी वाणी राही नहीं बल्कि अपने जीवन के राही दिया।

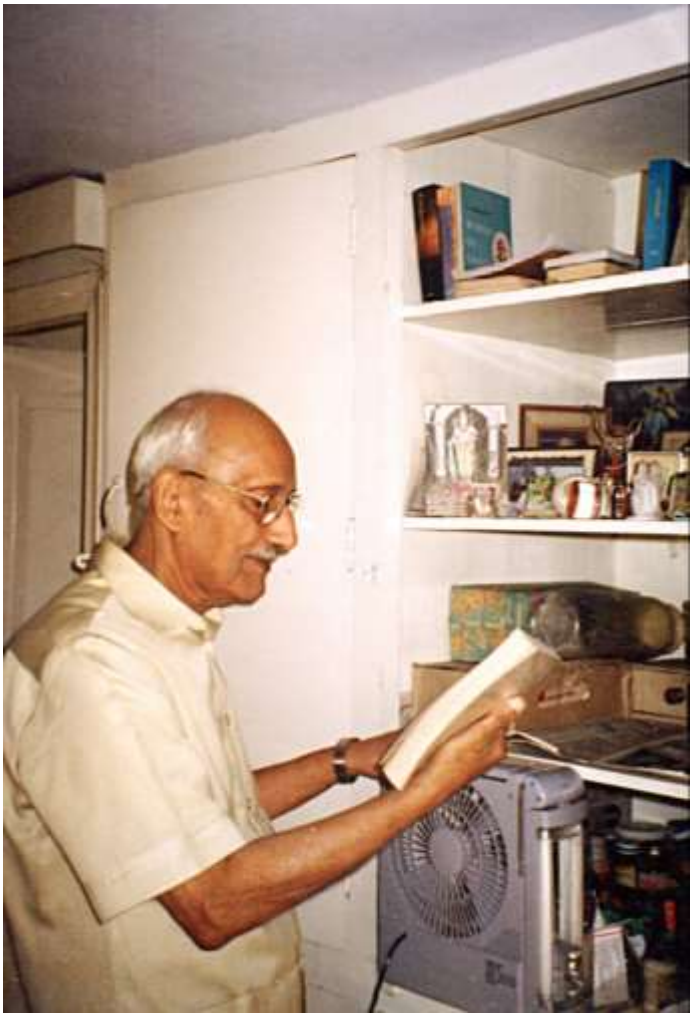

मैं पढ़ा करता था, 'सदगुरु मौन राही ज्ञान देते हैं।' यही ज्ञान मौन में साधक के आन्तर में उस के मल का दर्पण बनता है, यही सदगुरु की मौन दीक्षा है। उससे साधक अनुभव से जान लेता है कि सदगुरु ने, भला बुरा वह जैसा भी है, उसे स्वीकार किया है।

बिन इस प्रकार अपना मुखड़ा देखे और उसे बदलने की उत्कृट अभिलाषा के 'भले बुरे हम तेरे,' यह कहना तो विपरीत पथ पर चलना है। अपने अवगुणों को अपने आपसे ही छिपाना है। साधक के इस भाव का दर्शन भी परम पूज्य माँ के भाव प्रवाह राही ही हमें मिलता है, जो उन्होंने भगवान के चरणों में धरा :

मन चाहे फूलों की जा, मैं ख़ुद ही जाये चढ़ूँ।
इक इक अंग तेरा छू कर प्रभु जी, राममय मैं बनूँ॥

तुम ही कहो हे राम मेरे, क्या कभी यह कर पाऊँगी।
श्याम वह दिन कब आयेगा, मैं तेरी हो जाऊँगी॥

जब 'मैं' मेरी मिट जायेगी, तव चरण धूलि कहलाऊँगी।
जो चरण धूलि तेरी माँगेगा, मैं उसकी हो जाऊँगी॥

तेरे पास प्रभु गर समय नहीं, कैसे जान तुझे पाऊँगी।
इक बार राह गर जान ली, भक्तन् को तेरे बतलाऊँगी॥ ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा

समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च 2023

अर्पणा आश्रम समाचार

अर्पणा की अनमोल निधि - 'उर्वशी'

परम पूज्य माँ की वाणी और शास्त्र तुल्य उनके जीवन से हमें सर्वोच्च ज्ञान - दिव्य 'उर्वशी' की प्राप्ति हुई..

परम पूज्य माँ से प्राप्त ज्ञान के अथाह भंडार में से अभी तक हम केवल एक छोटा सा खंड ही प्रकाशित कर सके हैं जैसे कि श्रीमद्भगवद्गीता, जपुजी साहिब, कुछेक उपनिषद एवं वेदांत के प्रश्नों के पूज्य माँ द्वारा दिये गए उत्तर।

बहुमूल्य दिव्य ज्ञान से ओत-प्रोत अर्पणा प्रकाशन को 25 फरवरी से 5 मार्च तक नई दिल्ली में आयोजित **विश्व पुस्तक मेले** में पुस्तकों के असंख्य चाहुक व्यक्तियों और सच्चे साधकों के साथ अर्पणा को सांझा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अलविदा प्रिय राज!

राज, अर्पणा परिवार के एक अतीव प्रिय सदस्य थे.. परम पूज्य माँ के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धा एवं सभी लोगों की सहायता करने के उनके स्वभाव ने उन्हें हरदिल अज़ीज बनाया। उन्होंने अपना पूर्ण जीवन परम पूज्य माँ एवं 'अर्पणा' की निःस्वार्थ सेवा में समर्पित किया। 4 मार्च को अचानक हृदय गति के रुकने के कारण, परम पूज्य माँ के प्रेम को अपने हृदय में समेटे हुए वह अपनी आध्यात्मिक यात्रा के अगले चरण पर चले गये। अर्पणा परिवार का प्रेम एवं सभी की प्रार्थनायें सदैव उनके साथ हैं और वह सारी अच्छाई भी.. जो उन्होंने इस जीवन में भगवान जी की सच्ची समर्पित सेवा से उपार्जित की।

अलविदा प्रिय राज.. भगवान जी के चरणों में हम फिर से मिलेंगे।

हरियाणा

विश्व महिला सशक्तिकरण दिवस

विश्व महिला सशक्तिकरण दिवस, 2023, का जश्न मनाने के लिए, 30 गाँवों के 176 अर्पणा के स्वयं सहायता समूहों से 3000 महिला सदस्यों ने अर्पणा के महिला कार्यक्रम के 25 वर्ष पूरे होने पर गाँव कलसोरा में आयोजित मेले में भाग लिया।

12 नवनिर्वाचित महिला सरपंच, ब्लॉक समिति की 3 महिला सदस्य एवं 1 ज़िला परिषद सदस्य को विशेष अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने पर्यावरण को हरा-भरा बनाने के लिये एक नाटक प्रस्तुत किया एवं कई अन्य ने कबड्डी, दौड़ इत्यादि में भाग लिया।

होली के खूबसूरत रंगों और हर्षोल्लास के गीतों से हवा में रंग बिखेरते हुए इस प्रेरक कार्यक्रम का समापन हुआ।

हमारा उद्देश्य - सक्षम और सशक्त समाज बनाना

3 दिसंबर 2022 को गाँव बुढाखेड़ा में अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता दिवस मनाया गया। यहाँ दीनदयाल उपाध्याय सैटेलाइट सेन्टर नीलोखेड़ी से आये डॉ. राहुल मुख्य अतिथि रहे।

55 गाँवों के 1,475 विकलांग व्यक्तियों में से 650 लोगों ने इसमें भाग लिया। एक नाटक, एक विकलांग व्यक्ति के जीवन की सच्ची कहानी पर आधारित, का मंचन किया गया, जिसमें दिखाया गया कि अर्पणा के विकलांग व्यक्तियों के संगठन से सहयोग व अपनापन पाकर कैसे उनका जीवन ही बदल गया।

अर्पणा अस्पताल

नि:शुल्क मेडिकल कैंप

5 फरवरी 2023 को अर्पणा अस्पताल में नि:शुल्क जांच एवं परामर्श के लिए, लैब टेस्ट और दवाओं पर छूट के साथ, विशेष शिविर आयोजित किया गया।

डॉ. मोहित गोयल, एमबीबीएस, एमडी, डीएम (न्यूरोलॉजी), ने न्यूरोलॉजी के लिये परामर्श दिया। अन्य विशेषतायें जैसे फिज़ियोथेरेपी (डॉ जी के बाला, एमपीटी, डीआरपीटी), डेंटल (डॉ. क्वीन्सी शर्मा, बीडीएस), चिकित्सा एवं नेत्र संबंधी जाँच और एक्यूप्रेशर (श्री रवींद्र कुमार, एमडी) इत्यादि भी शामिल थे।

दिल्ली के कार्यक्रम

'अर्पणा' मेरे लिए एक दिव्य आशीर्वाद है!

मेरा नाम पूजा है, मैं दक्षिण दिल्ली के गौतमपुरी में पुनर्वास कॉलोनी में रहती हूँ। मेरे पिता एक ड्राइवर हैं जिनकी आय काफी कम है। सौभाग्य से, मैंने अर्पणा ट्रस्ट शिक्षा केन्द्र मोलर बंद में प्रवेश लिया जब मैं केवल 5 वर्ष की थी। यहाँ पर शिक्षक न केवल शिक्षण के प्रति समर्पित थे, वे प्रत्येक छात्र में रुचि भी लेते थे। मुझे विश्वास है कि मैंने यहाँ पर सर्वश्रेष्ठ प्राइवेट स्कूलों के बराबर ही शिक्षा ग्रहण की। मैंने 12वीं की बोर्ड परीक्षा 2020 में 82% अंक लेकर उत्तीर्ण की। फिर अर्पणा ने मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय से, पत्रकारिता में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की।

अर्पणा मेरे लिए एक दिव्य आशीर्वाद है। मेरे लिये अर्पणा क्या है, यह व्यक्त करने के लिये मेरे पास प्रयाप्त शब्द नहीं।

विनीत प्रायोजक मिलने व अवलोकन करने आये!

केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रन, यूएसए, के श्रीमती विंदू, श्री विनय छाबड़ा, 2005 से अर्पणा के शिक्षण कार्यक्रम का समर्थन कर रहे हैं!

16 दिसम्बर 2022 को वे अर्पणा ट्रस्ट, नई दिल्ली में आये और उन्होंने अपने संदेश में कहा,

"अर्पणा ट्रस्ट द्वारा अद्भुत कार्य हो रहे हैं.. हम आशा करते हैं इसी सद्भावना से भविष्य में यहाँ और अधिक वृद्धि देखने को मिलेगी।"

'ज्ञान आरंभ' की ट्यूशन कक्षाओं में 10वीं एवं 11वीं भी सम्मिलित!

वंसत विहार के अर्पणा शिक्षा केंद्र में 1- 9 कक्षा के वंचित छात्रों को पढ़ाया जाता है। इस वर्ष 10वीं एवं 11वीं कक्षाओं को भी इसमें जोड़ा गया है।

दोपहर के समय चलने वाली यह कक्षायें वंचित छात्रों को उत्कृष्ट शिक्षा उपलब्ध करा रही हैं। इस वर्ष, छात्रों के अनुरोध पर, छात्रों की 10वीं की सीबीएसई परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष कक्षाएं आयोजित की जा रही हैं।

हिमाचल प्रदेश के कार्यक्रम

'सरू' में किसानों द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र भ्रमण

27 दिसंबर 2022 को भादियाकोठी और गजनोई के रावी घाटी किसान उत्पादक संगठनों की महिला किसानों ने सरू कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) की यात्रा की।

केवीके के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुरेश रैना ने महिलाओं को बेहतर फसल उगाने के तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने उनके सवालों के जवाब भी दिए और उन्हें भविष्य में सलाह/परामर्श के लिये अपना मोबाइल नंबर भी दिया।

उद्यान विभाग से डॉ. नेहा ने सेब, खुमानी, अखरोट और आलूबुखारे के पौधों के विषय में बताया, विशेष रूप से सेब के पेड़ों के लिये.. जिससे उन्हें अच्छी आय प्राप्त हो सके। महिलाओं ने सेब के पौधों के लिये अनुरोध किया जिसे कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा उपलब्ध करवाया जायेगा।

सहायक वैज्ञानिक डॉ. परंजय ने पौधरोपण एवं सब्जियाँ उगाने के कारगर तरीके बताये। महिलाओं ने केवीके के उद्यानों एवं सब्जी के खेतों के साथ साथ उनकी नर्सरी और पॉलीहाउस को भी देखा।

अर्पणा हिमाचल में समर्थन के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन (यूएसए), बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट (नई दिल्ली) और श्रीमती सुषमा अग्रवाल (नई दिल्ली) अर्पणा ग्वेर्नज़े की बहुत आभारी हैं!

We urgently need your assistance to continue these programs in Haryana, Himachal Pradesh, and New Delhi

Contact Persons: Mr. Harishwar Dayal Executive Director, Mobile: 91-9818600644

Mrs. Aruna Dayal, Director Development, Mobile : 91-9991687310

Donation to Arpana provide_50% tax relief under section 80G of the Income Tax act 1961

Send Donations to Arpana Information & Resources, Madhuban, Karnal, Haryana 132037

Emails: arct@arpana.org and at@arpana.org, Websites: www.arpana.org and www.arpanaservices.org

Instagram@arpanaorg, You Tube:Arpana Charities, Facebook Arpana Charities&Arpana Trust

ARPANA TRUST

EDUCATION FOR DISADVANTAGED CHILDREN

- Tuition support for classes 1-12, pre-school classes for toddlers, cultural activities
- Vocational Training classes

HUMANE VALUES FOR AN EQUITABLE SOCIETY

- Dramas, Publications, Satsangs
- Charitable grants for the vulnerable
- Health/socio economic assistance.

DONATE ONLINE

ARPANA RESEARCH AND CHARITIES TRUST

PROVIDES MODERN HEALTH CARE THROUGH:

- Arpana Hospital for free/affordable health care.
- Arpana Medical Center, Himachal.

EMPOWERING WOMEN

- Self Help Groups & SHG Federations.
- Micro-Credit, Income generation, Community development

EMPOWERING THE DIFFERENTLY ABLED

- Differently Abled Persons organizations for health, assistive devices, certifications and income generation.

DONATE ONLINE

Please send donations to: Arpana (Information & Resources Office), Madhuban, Karnal, 132037